प्रस्तुति

अच्छी तैयारी तथा अज़्यास से *टीचर'ज़ गाइड* (शिक्षक का मार्गदर्शक) नामक इस भाग के पाठों को अच्छी तरह से प्रस्तुत किया जा सकता है। सिखाने वाले का मूल उद्देश्य पाठ को संक्षिप्त, दिलचस्प, समझ आने वाले और मानने योग्य ढंग से सिखाना चाहिए। व्यर्थ हावभाव दिखाने से सीखने वाले की दिलचस्पी कम हो सकती है। इसलिए कोई पाठ पढ़ाते समय सिखाने वाले को चाहिए कि वह अपने समय का इस्तेमाल समझदारी से करने का प्रयास करे।

पाठ को प्रस्तुत करते समय निज़्न बातों को ध्यान में रखा जाए:

प्रबंध

किसी पाठ की प्रस्तुति और स्वीकृति के लिए प्रबंध करने का विशेष महत्व हो सकता है। दूरी का ध्यान रखना ज़रूरी है। सिखाने वाले को चाहिए कि वह शिक्षार्थी अर्थात सीखने वाले के निकट बैठने से परहेज रखे, परन्तु उसे उससे बहुत दूर भी नहीं बैठना चाहिए। बहुत निकट बैठने पर सीखने वाले में शिक्षक बनने की इच्छा जागृत हो सकती है और बहुत दूर बैठने से उसके मन में दूरी की भावना आ सकती है, जिससे एक प्रतिकूल और अस्वीकार्य वातावरण पैदा हो सकता है।

सज़्भव हो तो सिखाने वाले को सीखने वाले के पास मेज़ या कुर्सी पर बैठना चाहिए। इस प्रकार के प्रबंध से आवश्यक होने पर शिक्षक और छात्र दोनों एक ही अध्ययन शीट और एक ही बाइबल का इस्तेमाल कर सकते हैं। यदि शिक्षक दायें हाथ से काम करने वाला है तो उसे दायें हाथ बैठना चाहिए और यदि बायें हाथ से काम करने वाला है तो उसे बाईं ओर बैठना चाहिए। इस प्रकार सीखने वाला शिक्षक के हाथ की रुकावट के बिना उसे लिखते या कोई चित्र बनाते हुए आसानी से देख सकता है।

सामग्री

टीचर'ज़ गाइड (शिक्षक का मार्गदर्शक) के इस भाग में पाठों के अध्ययन के लिए शिक्षक को अध्ययन शीट, बाइबल, और पेन की आवश्यकता पड़ेगी। शिक्षक को अपने पास कोई मान्य अनुवाद रखना चाहिए जो बाइबल की मूल भाषा का अक्षरश: अनुवाद हो, अंग्रेज़ी के अनुवादों में किंग जेज़्स, द अमेरिकन स्टैण्डर्ड, द न्यू अमेरिकन स्टैण्डर्ड या द रिवाइज़्ड स्टैण्डर्ड अनुवाद के संस्करणों का इस्तेमाल किया जा सकता है। इस पुस्तक में हमने बाइबल सोसायटी के हिन्दी O.V. संस्करण का इस्तेमाल किया है। कुछ अनुवादों का

इस्तेमाल करने पर अध्ययन शीट या रिक्त स्थानों में पाए जाने वाले शब्दों में थोड़ा-बहुत अन्तर हो सकता है। जहां पर सीखने वाले के पास कोई मान्य अनुवाद न हो या वह अच्छी तरह पढ़ न सकता हो, या उसे आयतें ढूंढ़ने में कठिनाई आती हो, तो उसके लिए कई बार मोटी छपाई वाली बाइबल सहायक हो सकती है, शिक्षक और शिक्षार्थी उसी बाइबल से काम चला सकते हैं। यदि छात्र को बाइबल का आवश्यक ज्ञान नहीं है, और उसे आयतें ढूंढ़ने में बहुत समय लगता है, तो उसके लिए पाठ आसानी से समझना कठिन होगा, और पाठ का प्रभाव जाता रहेगा।

कई बार शिक्षक को अतिरिक्त कागज़ की आवश्यकता पड़ सकती है; परन्तु यदि शिक्षक अध्ययन शीट का इस्तेमाल कर रहा है तो वह उस शीट की पिछली ओर भी लिख सकता है। ऐसा करने से छात्र को एक ही शीट पर नोट्स तथा चित्र भी मिल जाएंगे।

पाठ को प्रस्तुत करना

सिखाने वाले या शिक्षक को चाहिए कि पाठ को प्रस्तुत करने से पहले, कुछ समय सीखने वाले के साथ बिताए। यह समय थोड़ा परन्तु अर्थपूर्ण हो जिससे शिक्षक को शिक्षार्थी को समझने और उससे अच्छा, मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाने में सहायता मिले।

सबसे पहले, शिक्षक पाठ का परिचय देता है। परिचय देते हुए शिक्षक संक्षेप में बताता है कि वह क्या समझाने जा रहा है।

फिर, शिक्षक पाठ के प्रत्येक भाग का परिचय देने के बाद उस पाठ के कई भाग करके बताता है। प्रत्येक भाग का परिचय देकर शिक्षक उसे विस्तार से बताने के बाद प्रत्येक भाग का सार बताता है। अध्ययन पूरा करने के बाद, शिक्षक यह सुनिश्चित करने के लिए कि सीखने वाला पाठ की हर बात को समझता है, पूरे पाठ को फिर से दोहराता है।

उसके बाद, शिक्षक अध्ययन के दौरान सीखे गए पाठ का सार बताकर संक्षेप में यह कहकर कि उसे उम्मीद है कि वह छात्र उस बात को मानता है, पाठ का निष्कर्ष निकालकर उसे समाप्त कर देता है।

अन्त में, शिक्षक सीखने वाले की प्रतिक्रिया चाहता है, यदि पाठ में प्रतिक्रिया मांगी गई हो।

टीचर'ज़ गाइड (शिक्षक का मार्गदर्शक) के पाठ प्रस्तुत करते हुए सिखाने वाले को चाहिए कि वह प्रत्येक आयत को पढ़ने से पहले एक प्रश्न पूछे, जिससे छात्र को रिक्त स्थानों में शब्दों पर ध्यान लगाए रखने में सहायता मिलेगी। सीखने वाले को कभी-कभी यह समझने में भी कठिनाई आती है कि कहां लिखे, क्या लिखे और कई बार उससे लिखने में गलती भी हो जाती है, इसलिए शिक्षक को चाहिए कि अध्ययन शीट में रिक्त स्थानों को वह स्वयं भरे।

अध्ययन शीट के रिक्त स्थानों को भरने वाले शिक्षक के लिए एक अतिरिक्त लाभ यह होगा कि अध्ययन शीट उसके हाथ में रहेगी जिससे वह जब चाहे अध्ययन शीट के पीछे लिख या चित्र बना सकता है।

छात्र से आयतों को ऊंचे स्वर में पढ़ने के लिए कहा जाना चाहिए। इससे सिखाने वाले को यह जानने में सहायता मिलेगी कि सीखने वाला कितनी अच्छी तरह से पढ़ सकता है और ज़्या उसने सही पढ़ा है। इससे छात्र को भी बाइबल को सावधानीपूर्वक पढ़ने का महत्व समझ आ सकता है जिससे उस पर बाइबल की बात का प्रभाव भी होगा।

सिखाने वाले (शिक्षक) को चाहिए कि वह सीखने वाले को उन रिज़्त स्थानों में दिए गए बाइबल के प्रश्नों के उज़र ढूंढ़ने में उत्साहित करे। इस प्रकार पाठ के समाप्त होने पर शिक्षक पूछ सकता है, ''ज़्या यह बात मैंने कही है, या बाइबल ऐसा सिखाती है। यदि यह मेरी ओर से है, तो उसकी ओर ध्यान न दें, परन्तु यदि बाइबल यह कहती है, तो इसे मानें।''

सिखाने वाले को चाहिए कि वह उसी गति से आगे बढ़े जितना सीखने वाले को अच्छी तरह समझ आता हो। अधिक तेजी से आगे बढ़ने पर छात्र को नुकसान हो सकता है, और अधिक धीमे चलने पर अध्ययन नीरस व उबाऊ बन सकता है।

सिखाने वाले को चाहिए कि वह अगला पाठ शुरू करने से पहले यह सुनिश्चित कर ले कि सीखने वाले को उसकी हर बात समझ आ रही है या नहीं।

यदि सीखने वाला शिक्षक से कोई प्रश्न पूछता है और उसे उस प्रश्न का उज़र मालूम नहीं है, तो शिक्षक को चाहिए कि वह छात्र से अध्ययन करके अगली बार उसका अध्ययन करने के लिए समय मांगे। यदि सीखने वाला कोई ऐसा प्रश्न पूछता है या कोई ऐसा विषय उठाता है जिसका पाठ से कोई सज़्बन्ध नहीं है और उसका तुरन्त उज़र नहीं दिया जा सकता हो, तो शिक्षक को ऐसे चाहिए कि असज़्बन्धित विषय पर फिर कभी अध्ययन करने की अनुमति मांगें।

पाठ प्रस्तुत करने के बाद यदि शिक्षक के पास अपनी प्रस्तुति पर विचार करने का समय है, तो उसे चाहिए कि पृष्ठ 98 पर ''तैयारी'' शीर्षक से दिए गए पाठ में से अवलोकन के लिए आठ प्रश्नों पर विचार करे और यह अवलोकन भी करे कि उसने अपना पाठ कितनी अच्छी तरह से बताया।